" हिन्दुस्तान में भयंकर ज्वालामुखी फूटने पर तुम लोग
उसमें कूद पड़ना "

की

आज्ञा देने वाले
स्वर्गीय पूज्य पिता
बापू
की
पवित्र स्मृति-समाधि पर सुभक्ति-सुमन-स्वरूप
यह पुस्तिका
सादर समर्पित है

उन्हीं का :-
--नथुनीराम

विद्रोही बिहार के मंत्रदाता

देशरत्न पूज्य डा. राजेन्द्रप्रसाद जी

का

मेहसी स्टेशन पर यह था प्रेमोद्‌गार --

'अपनी सरकार होने पर शहीद रामअवतार साहजी का स्मारक यहाँ बन कर रहेगा ।'

भारत सरकार के उपमन्त्री माननीय श्री शैयद डाक्टर महमूद साहब --

Babu Ram Autar Sah, a brave, patriotic Congress worker was shot dead by the tommies in 1942. He died a martyr's death. He did his duty to the country but we should also do our duty to his memory. We owe it to our dead departed friend & co. worker. He does not require our help but whatever memorial we would establish in his memory will be for our own benefit. The people of Champaran and particularly people of Mehsi should come forward to establish some memorial in his memory and contribute generously towards it.

Syed Mahmud

अनुवाद --

वीर, देशभक्त, कांग्रेसकर्मी, बाबू रामअवतार साह को 1942 में टौमियों ने शूट कर दिया । वे एक शहीद की मौत मरे । उन्होंने देश हित अपने कर्तव्य का पालन किया किन्तु हम लोगों को भी उनकी स्मृति में अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये । इसके लिये स्वर्गवासी सहकर्मी हमारे मित्र का ऋण हमारे उपर लदा हुआ है । उन्हें हम लोगों के किसी सहाय की अपेक्ष तो नहीं है लेकिन हम लोगों द्वारा निर्मित उनका कोई भी स्मरण-चिन्ह हम ही लोगों के लाभ का होगा । उनकी स्मृति में किसी स्मारक के निर्माण तथा इस ओर जी खोल कर चन्दे के दान में चम्पारन प्रधानत, मेहसी के लोगों को आगे बढ़ना चाहिए ।

8-2-55 **सैयद महमूद**

बिहार राज्य सरकार के न्यायमन्त्री
माननीय श्री शिवनन्दनप्रसाद मण्डल जी --

प्रस्तुत पुस्तिका स्वतन्त्रता आन्दोलन, अगस्त 1942 ई0 के शहीद मेहसी ;चम्पारणद्ध निवासी श्री रामावतार साहु की संक्षिप्त जीवनी है । लेखक ने इसमें अपनी आँखों देखी उन पर गोरों द्वारा की गई पैशाचिक क्रूरता का मार्मिक विवरण दिया है । प्रोफेसर बलदेव नारायण, बिहार विद्यापीठ द्वारा लिखित ''अगस्त कांति'' नामक पुस्तक पृष्ठ 346, 347 में भी उक्त शहीद के जीवनार्पण का उल्लेख है ।

श्री रामावतार साहु उन निस्पृह देश-सेवियों में थे जिन्होंने देश की आजादी के लिये अपना सारा जीवन समर्पण कर दिया । उनका जीवन और उनकी स्मृति निश्चय ही हमारे अमूल्य घरोहर है ।

इसमें सन्देह नहीं कि उनके जीवन से हम लोगों को अपनी स्वतंत्रता-रक्षा करने और देश को उत्तरोत्तर सबल बनाने में सदैव प्रोत्साहन मिलता रहेगा ।

पटना, 16-1-1955 शिवनन्दनप्रसाद मण्डल

भारत के इतिहास में 1947 ई. के 15 अगस्त की तिथि सदा स्मरणीय रहेगी । यह वह तिथि है जब अंग्रेजों ने देश के उन्नायकों को इसकी शासन सत्ता हस्तांतरित की थी और जब भारत ही की नहीं बल्कि अज्ञात रूप से सारी मानवता को मुक्ति मिली थी । भारतीय काँग्रेस, प्रातः स्मरणीय पूज्य महात्मा गांधी तथा अनेकानेक सुयोग्य नेताओं के वर्षों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप सदियों से परतन्त्रता की बेड़ियों में कराहता हमारा देश स्वतंत्र हुआ । स्वतंत्रता के प्रयास में सारे देश की सहानुभूति तथा पर्याप्त सहाय प्राप्त था तभी इस पुण्य बेला का आगमन हुआ । नेतावर्ग के आराधकों की मण्डली पंक्तिबद्ध होकर हमारे सामने दृष्टिगोचर होती है और हमारी विस्मृति की शक्ति के बाहर की बात है कि हम अदृश्य कर सकें । लेकिन इन नेताओं के अतिरिक्त देश के कोने कोने में ऐसे भी असंख्य वीर बाँकुरे हुये हैं जिनके हृदय में स्वतन्त्रता की दीप-शिखा दिन-रात जलती रही है और जिन में देश-सेवा की लहरें इस तरह हिलोरें लेती रही कि उनने अपना सर्वस्व लुटा दिया । उनमें अनेक ने बलि की शुभ वेता के आगमन पर बिना किसी आग-पीछ और संकोच के अपने को होम भी कर दिया-स्वतन्त्रता की पावन वेदी पर अपने रक्तअर्घ्य को हँसते हँसते चढ़ा दिया । लेकिन नाम और ख्याति की गन्ध भी इन्हें नहीं लगी न व्यापक रूप से इनकी चर्चा ही है । ऐसे आराधकों और शहीदों की पुण्य स्मृति भी हमारे हृदय-पटल पर अमिट रूप से खुद गई है । जिस महापुरूष की जीवनी का एक संक्षिप्त विवरण यहाँ लिखा जा रहा है, वे भी इसी

कोटि के निस्पृह देश–सेवकों में एक थे और जिनका बलिदान मैंने अपनी अपनी आँखों देखा था ।

आपका जन्म एक सर्व–सम्पन्न सम्भ्रान्त तैलिक वैश्य कुल में शुभ तिथि श्रावण शुक्ल 14 मंगलवार फसली सन् 1304 की मंगलमय वेला में सुप्रसिद्ध ग्राम मेहसी जिला चम्पारण ;बिहारद्ध में हुआ था । आपका राशि–नाम था विन्दालाल जी तथा पुकार का नाम रामअवतार साह था । अपने पूर्वजों की नाई ये सदा 'शाव' आस्पद से ही विख्यात थे । आपके पूज्य पिता थे स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री रामप्रसाद साह जी । एक सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के नाते आपके शुभ अवतरण के सुअवसर पर एक बड़े ज्योतिषी भी उपस्थित हुये थे । कहा जाता है कि आपको उन्होंने महाभारत के पाण्डव दल का एक वीर योद्धा बतलाया था । आपकी एक कुण्डली भी तैयार की गई । आपके सद्भाव, निस्पृह लोकसेवा, तथा देश के लिये अपने जीवन के दान पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि उक्त ज्योतिषी जी की आपके प्रति की हुई भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध हुई ।

विद्याध्ययन में आप तेज थे । लेकिन आप जब बिल्कुल ही किशोर थे––आपको मसिदान भी नहीं हो पाया था कि आपके पूज्य पिता जी का वैकुण्डवास हो गया और कारबार की सभी जिम्मेदारियों का असाधारण बोझ आप पर आ पड़ा । आपको सोरे के उत्पादन और निर्यात, बड़ी महाजनी, गल्ले के शानदार आढ़त, विशल खेती इत्यादि के अतिरिक्त अपनी तथाशिवहर राजा साहब की साझीदारी में तगड़ी जमीन्दारी का कारबार था । अतः विद्यालय का पढ़ना लिखना छोड़कर आपको अपने पिता

जी की गद्दी पर बैठना पड़ा । आपने बड़ी खूबी और बुद्धिमानी के साथ अपने सच्चे सलाहकारों तथा अपने गुमाश्ता पटवारियों की मदद से अपने सारे कारबार को धीरे धीरे सम्भाल लिया और अपनी गद्दी का नाम उँचा ही रक्खा ।

बाल्यकाल ही में बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन ने आपके हृदय में अपने देश की सेवा का भाव जाग्रत कर दिया था । वे कहा करते 'मैं स्वाज्य का एक सिपाही बनूँगा' । परन्तु पिता जी की आकस्मिक तथ असामयिक मृत्यु के कारण तथा कारबार सम्भालने वाले किसी दूसरे व्यक्ति के नहीं होने के कारण आप अपने देशानुराग को एक खुले कार्यक्षेत्र के बृहत प्रांगण में नहीं लगा सके । आप अपने ही ग्राम तथा अड़ोस-पड़ोस में स्वराज्य की नींव डालने लगे ।

खादी तथ स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग तथा प्रचार आपका मुख्य ध्येय रहा । स्वयं सदा सादा कुरता और धोती पहना करते थे । ग्राम पंचायत के आप हिमायती थे । आपकी न्याय प्रियता की प्रख्याति दूर दूर तक फैली हुई थी । मेहसी की नहीं बल्कि सुदूर ग्रामों के मामले पंचायती के लिये आपके यहां आया करते । कोर्ट तक पहुंचे हुये मुकदमों के भी न्याय लोग आप से करवाते और प्रायः दोनों पक्ष संतुष्ट रहते । आज भी आपके परिवार वाले यथा सम्भव खूबी के साथ यह कार्य कर रहे हैं । हिन्दू, मुस्लिम ऐक्य के तो आप बड़े हिमायती थे मुस्लिमों को उनके किसी भी त्यौहार के मौके पर उन्हें मदद किया करते । मौजे में बीसों ताजिये बनते जिनमें आधे तो मालिकी ही होते । सभी

ताजियों के अखाड़े आपके निकट आते और प्रोत्साहन पाते । ग्राम के नवयुवकों के स्वास्थ्य सुधार की ओर भी आप का पूरा ध्यान रहता था । इन्हें कुश्ती लड़ाने के लिये अपने यहाँ सुन्दर सुन्दर पहलवान भी रखते थे । कुश्ती में बाजी मारने वालों को समय समय पर पुरस्कार भी दिया करते थे । आम रक्षा के लिये वर्दी के साथ स्वयंसेवक भी रक्खा करते थे । बालकों को पढ़ाने लिखाने में भी आप का कम हाथ नहीं था । मेहसी में एक हाई स्कूल के रहने पर भी एक नेशनल हाई स्कूल खुलवाया था ताकि राष्ट्रीय गुणों का शिक्षण और प्रसारण हो सके । इस विद्यालय के प्रधान श्री विश्वमोहन कुमार सिंह थे जो इन दिनों बिहार युनीवर्सिटी के रजिस्ट्रार है । समाज सुधार के लिये सदैव सचेष्ट रहा करते थे । मुंगेर निवासी रायबहादुर श्री देवनन्दन प्रसाद सिंह के सभापतित्व में मेहसी ही में आपने एक प्रांतीय सम्मेलन करवाया था । आप कहा करते थे कि ग्राम सुधार पर ही देश सुधार अवलम्बित है । जो जहाँ हो उन्हें वहीं अपने समान और ग्रम के सुधार कार्य में तत्परता के साथ लग जाना चाहिये । काँग्रेस के तो बड़े हिमायतियों में आप एक थे । अफ्रीका के प्रवासी डाक्टर मणिलाल के सभापतित्व में तथा ब्रह्मचारी रामरक्ष जी की देखरेख में एक बार मेहसी ही में एक प्रान्तीय कांग्रेस सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ करवाया था ।

ईश्वर सत्ता में आपका अटूट विश्वास था । इस सम्बन्ध में आप कहा करते कि मनुष्य सेवा ही मनुष्य जीवन का सबसे उत्तम धर्म है । अपने मन्दिर में अच्छे अच्छे

पुजारी रक्खा करते । स्वयं रामायण पाठ किया करते । लेकिन दीनों के कष्ट निवारण ही में आपको आनन्द मिलता था । रोजगार करने के लिए योग्य रोजगारियों को पूंजी देना, कुंवार और कुंवारियों के विवाह के लिए उनके माता-पिता तथा अभिभावकों को असहाय पाकर मदद करना, घर जल जाने पर असमर्थ व्यक्तियों के घर बनवा देना, लाचार कर्जदारों को बकाया देने से मुक्त कर देना आपके संशानुगत साधारण कार्य थे । आप कहा करते थे कि मनुष्य का शरीर ऐसी ही सेवाओं के लिए है । सच है :- 'ईश्वर जन तो तेने कहिए पीर पराई जाने रे ।' आप अपने स्थान पर बहुत ही जनप्रिय थे । आपकी उदारता से आपका सारा परिवार परिचित है।

एक नर-देव थे आप । सौम्य, गौरांग सदुत्साहभरी मूर्ति । स्वदेशी प्रचार, ग्राम पंचायत, ग्राम रक्षा, विद्या प्रचार, सब में समभाव हिन्दू-मुस्लिम एकता, दीन-सेवा इत्यादि कार्य आप अपने ग्राम तथा सुदूर पड़ोस में जीवन पर्यन्त करते रहे ।

आपकी देशभक्ति तथा देशोद्धार के लिए आपकी अटूट लगन के अखण्ड्य प्रमाण अगस्त 1942 के देश व्यापी आन्दोलन के अवसर पर मिले जब आपने बड़ी गम्भीरता और वीरता के साथ क्रूर गोरों की निर्मम गोलियों की बौछार सहन करली और शान्ति तथा उत्साह के सन्देश देते हुए अपने प्राण का विसर्जन किया । इस घटना का आँखों देखा संक्षिप्त विरण निम्नलिखित है ।

जनता द्वारा निर्मित सरकार जो जनता के मंगल हित जनता पर शासन करती है उसे प्रजातंत्र सरकार कहते हैं । ऐसी सरकारें पश्चिमीय देशों में प्रायः सर्वत्र स्थापित है । इसी तरह की सरकार जनता पर शासन कर भी सकती है । अब वह युग ही नहीं रहा कि राजतंत्र सरकार सकुशल कहीं टिक सके । देश के स्वामी होने का अधिकार देश की जनता को है -- इस सिद्धान्त के कायल अंग्रेज भी बहुत पहले हो चुके थे । भारत को स्वतंत्र बना कर यहाँ प्रजातंत्रात्मक सरकार स्थापित करने का प्रयास यों तो वर्षों से चला आ रहा था लेकिन अगस्त 1942 की देशव्यापक कान्ति ने भारत में अंग्रेजी सरकार की नींव हिला दी । स्वतंत्रता की लड़ाई में यह कान्ति अग्रणी तथा आशुफल-दायिनी प्रमाणित हुई । अतः इसका महत्व महान है । भारत के शासनाधिकार की आशा अंग्रेजों को तब तक बनी रही जब तक वे यह समझते रहे कि इसकी स्वतंत्रता का आन्दोलन देश-सीमित ही है तथा यह चंद नेताओं के कारण है । लेकिन जब उन्हें देश के भीतर तथा बाहर चलने वाले आन्दोलनों का पूर्ण ज्ञान हो गया तब वे समझा गए कि भारत में अब हमारी सरकार नहीं टिक सकती है और अन्त में उन्हें अपनी सत्ता हटानी ही पड़ी ।

अगस्त 1942 की घटना है । ब्रिटीश सरकार के अधिकारियों ने यह समझा कि अगर चोटी के नेताओं को नजरबंद कर दिया जाय या इन्हें जेलों में रख दिया जाय तो देश के उपद्रव मन्द पड़ जायेंगे और धीरे धीरे मिट भी जा सकेंगे । इसलिए अग्रण्य नेताओं को अज्ञात स्थान में रख दिया गया । अपने बन्दी नेताओं के

अमंगल की आशंका जनता के मस्तिष्क में घर कर गई । उनका हाल जानने की पूरी कोशिश की गई । लेकिन सरकार ने कुछ भी बतलाना जरूरी नहीं समझा बल्कि इस सम्बन्ध की पूछ-ताछ को अपना अपमान माना । आखिर जनता के धैर्य की सीमा टूट गई । बल्कि धैर्य ने रोष का स्थान ग्रहण कर लिया । अन्यायी सरकार की सत्ता संचालन के जितने साधन थे उन्हें छिन्न-भिन्न कर देने में लाभ प्रतीत हुआ । बड़े बड़े नेता तो किसी न किसी गुप्त स्थान में रख दिए गए थे । कोई भी प्रमुख नेता बाहर नहीं छोड़े गए थे । श्री जयप्रकाश नारायण तथा इनकी कोटि के लोगों ने छिपे छिपे ऐसी परिस्थिति में कार्य करना शुरू किया था । लेकिन ऐसे गाढ़े समय का उत्तरदायित्व बहुत ही गम्भीर हो चला था । आन्दोलन छिड़ने के पहले ही अपनी गिरफ्तारी की बात नेता लोग समझ गए थे । और वैसे कठिन समय के लिए कुछ परामर्श भी अपने कुछ कार्यकर्ताओं को दे गए थे । लेकिन संकेत पर जनता को ले चलने का सारा उत्तरदायित्व ग्राम ग्राम के स्थानीय नेताओं ही पर था । और इनमें स्वनाम धन्य श्री रामअवतार साह अग्रगण्य थे । जनता के रोष को नियंत्रित रखना असम्भव हो गया और अहिंसा के नियम का कुछ व्यतिरेक भी हो गया । परन्तु इसकी सारी जिम्मेवारी ब्रिटिश सरकार पर ही थी । कांति की अभूतपूर्व लहर सारे देश में छा गई ।

बिहार कांग्रेस ने आन्दोलन के संचालन के लिये दो सरकुलर बार बारी से निकाले । तोड़-फोड़ को प्रान्त

व्यापी बनाने में सरकुलर नं. 2 ने बड़ा काम किया जो यों था :-

कॉंग्रेस की खास हिदायतें सरकुलर नं. 2

हमारी आजादी की लड़ाई शुरू हो गई । अब तो इसमें मर मिटना है और विजय प्राप्त करना है । इस समय हर हिन्दुस्तानी के मनमें और मुँह पर यही बात रहे 'आजाद होंगे या मरेंगे'।' स्त्री-पुरूष, बूढ़े, बच्चे सभी की एक ही आवाज हो 'मृत्यु या विजय '। बस इसी बात का ख्याल रख्कर आगे बढ़ते जाना है इसके पहले भी कुछ हिदायतें दी जा चुकी हैं ।लेकिन याद रहे उनमें सारी बातें खत्म नहीं हो जाती। बम्बई से कॉंगग्रेस का ताजा आदेश आया हैं जो इस प्रकार हैं :-

1- टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार सब जगह काटे जाये। हां इस बात का ध्यान रहे कि हमारी ओर से कोई हिंसा नहीं होने पाये और सभी काम खुले आम हों ।

2- जहॉं तक हो सके 'आजाद होंगे या मरेंगे ' के पोस्टर सब जगह बांटे जायें और इसका नारा भी लगाया जाय ।

3- हर तरह के और हर तबके के हिन्दुस्तानी की सहानुभूति हासिल करनी चाहिये । इस बात के लिए पूरी कोशिश की जाय ।

4- इस विदेशी सरकार के लिये काम चलाना असम्भव हो जाय इसके लिये अहिंसा के रास्ते पर चलकर अपती जगह की परिस्थिति के मुताबिक जो भी काम करना चाहें करें ।

5– साथ ही अंग्रेज़ी हुकूमत की ताकत जैसे जैसे खतम करते जायें वैसे ही वैसे तत्काल उसकी जगह लेने के लिये अपनी राष्ट्रीय पंचायत कायम करते जायें । इस पंचायत में काँग्रेस के साथ मिलकर काम करने वाले सभी लोगों को लेना चाहिये । लोगों की जान माल की रक्षा करने के लिए स्वयंसेवकों का दृढ़ संगठन हो ।

6– ब्रिटिश सरकार की ओर से आपस में फूट और लड़ाई कराने का जो जाल बिछाया जा रहा है उसमें हरगिज न फंसे।

बिहार प्रान्तीय काँग्रेस कमिटी,
पटना

मेहसी एक जागरूक जगह है । कहा जाता है कि सम्राट चन्द्रगुप्त की मां 'मुरा ' यहीं अपने निर्वासन काल में रहकर चन्द्रगुप्त का जन्म पुनीत 'सीता कुण्ड ' नामक स्थान में दिया था । संस्कृत में रानी का एक पर्यायवाची शब्द 'महिषि ' है । मुरा को महिषि के सम्मानपूर्ण शब्द से सम्बोधित किया जाता था और इसी महिषि शब्द से इस स्थान का नाम मेहसी पड़ा । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ बेतिया ;चम्पारणद्ध के महाराज श्री गजसिंह का युद्ध इसी मेहसी में हुआ था । युद्ध में कम्पनी का कैप्टन मारा गया था और उसकी समाधि अभी तक इस मेहसी के मिर्जापुर टोले के कब्रगाह पर मौजूद है । धार्मिक चेतनता में भी यह आगे रहता आया है । हिन्दू मुसलमानों के मठ–मन्दिर तथा मजार–मेले के अतिरिक्त यहां सिक्खों, कबीरपन्थियों, आर्यसमाजियों, राधास्वामियों, तथा ईसाइयों के बड़े बड़े मठ और केन्द्र यहां हैं तथा यहाँ इनके अनेक अनुयायी

हैं । औद्योगिक क्षेत्र में हारमोनियम, सितार, इत्यादि संगीत के यंत्र से लेकर दी, सोरा, इत्यादि पचासों गृह उद्योग यहाँ चलते हैं जिनमें सीप के बटन तो भारत में एक मात्र यहीं शुरू से बनते हैं । रानैतिक कार्यों में भी यह बहुत अग्रसर रहा है । देश को स्वतन्त्र करने के हर तरह के प्रयास प्रान्त के साथ यहां होते रहे । बिहार कांग्रेस की स्थापना जब से हुई तब से हयाँ कांग्रेस आश्रम रहा है । और कांग्रेस के आदेशानुसार मद्यनिषेध तथा विदेशी चीजों के बहिष्कार में पिकेटिंग और नमक बनाने इत्यादि के काम हुए है, जिनके कारण अंग्रेजी सरकार की ओर से अनेक कार्यकर्ताओं को समय-समय पर दुख और दण्ड दिया गया । लेकिन दो को स्वतंत्र करने के लिए तथा इसके झण्डे को उँचा रखने के लिए यहाँ के कार्यकर्ताओं तथा जनता ने आपदाओं को निमन्त्रण दे रखा । प्रान्त के नेताओं का यहाँ आना-जाना तो सदा रहा ही । लेकिन यहाँ कार्य-कलाप ऐसे रहे कि प्रातःस्मरणीय पूज्य महात्मा गॉधी, देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी, तथा वीर सुभाषचन्द्र बोस जी के शुभागमन और उनके लोगों के भाषण समय समय हुए हैं । ऐसा स्थान 1942 की ऐतिहासिक कांति में अपना भाग पूरा करने में भला कब पीछे पड़ सकता था ।

आग वयालिस की जब फैली, ओट लपटें छाई सब ओर ।

बचता फिर मेहसी अंचल कब मचा यहाँ भी जय का शोर ।।

यहाँ भी तार कटे, इसके खम्भे गिरे, सड़कें कटी, पुल टूटे, विद्यालय बन्द हुए तथा पोस्ट ओफिस का पट हुआ बन्द । शत्रु की चीजें भी शत्रु के समान ही खलती है । इसलिये सरकारी चीजों के विनाश ही में जनता को सान्त्वना छिपी मिली । लड़के, जवान, अधेड़-बूढे, सभी मानो अपने नेताओं का कुशल इनसे पूछते और जवाब इनसे कुछ भी नहीं पाकर क्रुद्ध हो जाते; सभी सरकारी कार्यालय ठप पड़ गए । 'अंग्रेजों ! भारत छोड़ो ' के नारों से दिशाएँ गूँज उठीं ।

यहाँ तोड़-फोड़ का कार्यकम यों रहा । पूज्य महात्मा गाँधी तथा चोटी के अन्य नेताओं की सरकार द्वारा हुई गिरफ्तारी सुनते ही श्री रामअवतार साह जी बड़े क्षुब्ध हुए । इन्होंने अपने यहाँ ग्राम के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाकर यह तय किया कि इस बार स्वतंत्रता की आखिरी लड़ाई है और शासन संचालन के जो साधन हैं उन्हें बिना बेकार किए अंग्रेजी सरकार लाचार नहीं हो सकती और नेताओं से सुलह नहीं कर सकती । ऐसा चिचार कर उन्होंने स्थानीय रेल्वे स्टेशन तथा रेल्वे लाईन को छिन्न-भिन्न कराना तय कर दिया ताकि सरकारी कामों का होना कठिन हो जाय और सरकारी कर्मचारी या आफिसर भी इसकी प्रतिकिया में आ जा नहीं सकें । साथ ही राहों को भी जहाँ तहाँ कटवा देना निश्चित किया और कुछ पुलों को बेकार करा देना तय किया ताकि उनसे फौज या आफिसर आ जा नहीं सकें ।

इन कामों के लिये उनने अपने लोगों के साथ गाँ के काँग्रेस कर्ताओं तथा अन्य को लगा दिया । विद्यार्थियों से ज्यादा काम लिया । इस प्रकार के काम यहाँ 10

अगस्त से ही शुरू हो गए इस समय तक प्राँतीय काँग्रेस का कोई भी सरकुलर यहाँ नहीं पहुँच सका था ।

इस प्रकार के तोड़-फोड़ के काम मेहसी हाई स्कूल के लड़कों ने पहले प्रारम्भ किया । विद्यार्थी वीरेश्वर इन लोगों का अगुवा था । यह क्षात्र संघ का सभापति था और था बहुत ही प्रगतिशील विचार का । इसके साथ गाँव के काँग्रेसी तथा अन्य जवान भी थे । अपनी मैट्रिक परीक्षा को परवाह नहीं कर वह बड़े ही जोश के साथ काम करने लगा । पहले दिन एक जुलूस निकाल कर इसने दूकानों और कारखानों में हड़ताल करवाई । बिहार प्रान्तीय काँग्रेस का सरकुलर नं. 2 उसे मिल चुका था । हड़ताल का काम चकिया से लेकर मोतीपुर तक कराता रहा । उसके साथ काम करने वालों ने बड़ी जीवट दिखलाई । मीलों तक रेल्वे लाइन तोड़ डाली गई, और तार काट डाले गये, जहाँ तहाँ और स्टेशन के बगल में तार के खम्भे गिरा दिए गए, सड़कें जो मुजफ्फरपुर और मोतीहारी की ओर से मेहसी आती है उन्हें जहां-तहां काट दिया गया तथा इन पर स्थित कई पुल भी बेकार कर दिए गए । रास्तों पर कई जगह पेड़ के बड़े बड़े भाग काट कर रख दिये गये ताकि सरकारी पिट्ठुओं की कारें आ-जा नहीं सके । पोस्ट ओफिस जलाने में सभी कार्यकर्ताओं की राय एक नहीं हुई । आखिर स्टेशन मास्टर के इस आश्वासन पर कि आज से डाकघर नहीं खुलेगा वीरेश्वर ने इसमें अपना ताला लगा दिया और इस पर तिरंगा झण्डा फहरा दिया । झण्डा फहराते समय उसने गरज कर कहा -- '

इस झण्डे को उतर कर जो सरकार परस्त फेंकेगा वह देशद्रोही समझा जायेगा ।' अब स्अेशन की बारी आई । 18 अगस्त को सैकड़ों विद्यार्थी और ग्रमीणों ने स्टेशन को जा घेरा । वीरेश्वर ने हथौड़े से इसके कमरों में लगे ताले तोड़ दिये और कार्यकर्ताओं ने इसके हजारों रजिस्टर और फाइलों को जला दिया । लोग क्रान्ति के बड़े जोश में थे । इनने रेलगाड़ी के संचालक यंत्रों तथा अन्य सामान को तोड़-फोड़ कर बेकार कर दिया । इस प्रकार तोड़-फोड़ के काम 13 तारीख से लेकर 18 तक बड़े जोर पर चला।

तोड़-फोड़ के काम से स्टेशन मास्टर अद्यसव्रयसउ बहुत ही भयभीत हो गये, और कुछ लोगों ने बड़े जोर पर यह अफवाह फैला दी कि स्टेशन का खजाना लूट लिया गया है । जिन लोगों के मकान के सामने लाइन तोड़ दी गई है उनको सरकार की ओर से गोली पर उड़ा दिया जायेगा । ऐसी अफवाह फैलाने में कुछ पंचामार्गियों का भी हाथ था । ऐसी अफवाह सुनकर स्टेशन के कर्मचारियों से प्रभावित कुछ लोग कार्यकर्ताओं से बहुत ही नाराज हो गए और उनको कड़ी सजा देना तय किया । अफवाह के खण्डन ही के लिए जब वीरेश्वर लाइन पार कर कहा था कि उसके साथियों के साथ उसे लोगों ने पकड़ लिया और उसे बड़ी मार मारी । शुकदेव को भी बड़ी मार लगी । वीरेश्वर को कुछ लोग कोध में जान ही से मार देना चाहते थे लेकिन देश प्रेमियों के बीच में पड़ने से उसे छोड़ दिया लेकिन छोड़ा भी तो अधमरा कर । चिर की दासता भला क्या नहीं करा सकती थी । अपने ही भाइयों द्वारा देश की

स्वतंत्रता के लिए कार्य करने वालों के साथ ऐसा व्यवहार करना यहां की जनता को बहुत ही बुरा लगा और इनकी ओर से ऐसी बेरहमी के लिए प्रतिक्रिया होने की आशंका दीख पड़ी । तरियानी से सैकड़ों आदमी को 'शाव' के निकटवर्ती लोगों ने प्रतिशोध के लिए मंगवा लिया ।

इन घटनाओं से प्रातः स्मरणीय 'शाव' को बड़ी उदासी हुई । कार्यकर्ताओं को मार पड़ने से उन्हें बहुत दःख हुआ । उन्होंने अपनी गद्दी पर स्टेशन के सभी कर्मचारियों, तथा स्टेशन के निकट के जवाबदेह व्यक्तियों को बुलवाया । ग्राम के सभी गण्यमान्य व्यक्ति भी बुलाये गये । लोग भी इतने अधिक एकत्र हो गये कि तिल धरने की जगह नहीं थी । कार्यकर्ताओं पर पड़ी मार के सम्बन्ध में बातें हुई । रेलवे कर्मचारियें तथा कुछ अन्य लोगों ने सरकार द्वारा अपनी धड़-पकड़ का भय दिखलाया । बैठक में वीरेश्वर को भी अन्य कार्यकर्ताओं के साथ बुलवाया गया था । वीरेश्वर के वदन पर तमाम टिंचर थोपा हुआ था । वह चोट खाने के कारण ज्वर से पीड़ित था । उससे पूछने पर उसने बड़ी ठंढक के साथ जवाब दिया कि हम लोग एक बड़ी शक्ति से अपनी आजादी के लिए लड़ रहे हैं । हम लोगों के कार्य में किसी को विरोध करना उचित नहीं है । एकत्र लोगों में अनेक ने आजादी के सैनिकों की मार पर दुःख प्रकट किया । पूज्य 'शाव' ने बड़े मार्मिक शब्दों में सबों को समझाया । उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति की चर्चा करते हुए कहा कि सरकारी कर्मचारियों को भी इस समय देश के लिए त्याग दिखलाना चाहिए

। अहिंसा को मानते हुए हर आदमी जो चाहे करने के लिए स्वतंत्र हैं । हर एक को इन दिनों हड़ताल करनी चाहिए । जरूरत पड़ने पर मौत का भी सामना करना चाहिए तभी देश स्वतंत्र होगा । अब हम लोगों को ठान लेना चाहिए कि हम लोग करेंगे या मरेंगे । 'शाव ' के शब्दों ने सभी लोगों पर असर डाला । सबों ने अपने शब्द या मौन से देश के लिए कार्य करने की स्वीकृति प्रकट की और कार्यकर्ताओं की आर आशीर्वाद देने की मुद्रा में देखा । सभा सफल रही । यह 22 अगस्त की बात है । मैंने सभा में शुरू से आदि तक भाग लिया । सभा खतम होने पर 'शाव ' ने सोचा कि इसे व्यापक रूप में प्रकट कर देना चाहिए कि ग्राम में अब किसी भी प्रकार का मनमोटाव नहीं है और सब कोई एक सूत्र में बंधे हैं । इसलिए उन्होंने एक जुलूस फिर निकालना अनिवार्य समझा । इसके लिए लोगों को खबर कर दी गई ।

दूसरे दिन प्रभात होते होते हजारों लोग 'शाव' के निकट एकत्र हो गए । एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया । 'शाव' स्वयं जुलूस के आगे आगे चल रहे थे । तिरंगे झण्डों से ऐसी ही अन्य चीजों से सुसज्जित जनता की उमड़ी भीड़ उत्साह पूर्वक राष्ट्रीय नारे लगाते 'शाव' के गोदाम से स्टेशन की ओर डिस्ट्रिक बोर्ड की रोड़ से चल पड़ी । जुलूस पोस्ट ओफिस के निकट पहुँचा । जुलूस नाके तक ही पहुँचा था कि मडुवाबाद, विश्वम्भरपुर, प्रतापपुर इत्यादि गाँवों से भी हजारों लोग जयकार के नारे लगाते हुए आकर इसके साथ मिल गए थे । इसलिए जुलूस बहुत बड़ा हो गया था ।

डाकखाने और स्टेशन पर तिरंगे झण्डे फहरा दिए गए कुछ लोग फिर लाइन और इन्टर लौकिक को तोड़ने लगे । लोग लाइन पर जब दक्षिण दिशा की ओर बढ़ गए उत्तर दिशा से एक हवाई जहाज आया और भीड़ के उपर चकराने लगा । यह लोगों के सर पर उपर से नीचे आता फिर उपर चला जाता ।इसे नीचे आते जब देखते प्रयागराम अपने गुरुदेल से गोलियाँ इस ओर छोड़ते । दूसरे लोगों ने भी इसकी ओर कंकड-पत्थर फेंके । इस जहाज में बैठे लोग सम्भवतः लाइन इत्यादि के निरीक्षण करने वाले सरकारी कर्मचारी या गोरे अफसर थे । बहुत देर तक मंड़राने के बाद यह जहाज दक्षिण की ओर चला गया । जुलूस लाइन उखाड़ने का अपना काम करता रहा । वह जरा भी भयभीत नहीं हुआ और न यहाँ कोई अवाँक्षनीय कार्य ही हो पाया क्योंकि शाव जैसे वीर और सर्वप्रिय व्यक्ति वहाँ सदा मौजूद रहे । जुलूस ने आगे घूमकर हाई स्कूल के मैदान में एक सभा का रूप धारण कर लिया । वहाँ 'शाव' ने अहिंसा पर बहुत जोर दिया और सभी भाइयों को देश हित मिल जुल कर काम करना बतलाया; सभा खतम हुई । सभी शान्तिपूर्वक अपने अपने घर देशोद्धार का संकल्प लिए वापस हुए । मैं जुलूस में आदि से अन्त तक 'शाव' के साथ रहा तथा हाई स्कूल के मैदान में लोगों के सम्मुख एक संक्षिप्त भाषण में देश के लिए उचित कार्य करने के लिए अपना निवेदन भी रखा ।

जुलूस तो लाइन से चला गया । लेकिन पता चला कि कुछ भयभीत भाइयों ने मुजफ्फरपुर जाकर मेहसी के

आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम रेलवे अफसरों को लिख कर दे आए । प्रातः स्मरणीय 'शाव' का नाम नायक में रखा गया था । सदियों की दासता ऐसी कायरता का कारण थी । क्योंकि ऐसा नहीं माना जा सकता कि वे लोग देश को स्वतंत्रता नहीं चाहते थे । अर्जुन बाबु का नाम भी इस लिस्ट में था ।

अब क्या था । 23 अगस्त की रात ही में मुजफ्फरपुर के बिहार लाईट होर्स का कैप्टन करीब 100 गोरे सिपाही तथा करीब 350 जाट सिपाहियों के साथ एक ट्रेन पर मेहसी के निकट आ पहुँचा । लाइन कई माईल तक तोड़ दी गई थी । इसलिए मेहसी पहुँचने में उसे बड़ी रुकावट हुई । वह लाइन को ठीक करता हुआ आगे बढ़ा । गाड़ी पर लाइन बनाने के सामान भी लादे हुए था । लाइन बनाते उसे रात भर समय लग गया । गाड़ी मेहसी स्टेशन पर तड़के भोर तारीख 24 अगस्त को पहुँची ।

मेहसी पर पहुँच कर गोरों ने अपनी पैशाचिक क्रूरता का परिचय दिया । तारीख थी 24 अगस्त 1942 ई. । यों तो चम्पारण जिले में गोरे 18 अगस्त ही को पहुँच गए थे । इनके साथ वालूची और जाट भी थे । सभी गोरे अंगरेज नहीं थे । कनाडियन और अमेरिकल भी थे । हिन्दुस्तानियों को सजा देने के लिए समूची आंग्ल जाति उठ खड़ी थी । मेहसी में आने वाले गोरों का कैप्टेन था 'राईट' और निर्देशक थे दासत्व से दवे मोहन चौधरी एस.डी.ओ. और डी.एस.पी. खाँ साहब । पापी पेट से परेशान सैकड़ों जाट सिपाही साथ में थे ही । गोरों के तीन दल तीन ओर से मेहसी में घुस पड़े ।

एक दल वथना के सामने दक्षिण ओर से गाँव की ओर बढ़ा । दूसरा दल पहले पसरोनी गाँव में उपद्रव कर तथा कुछ गिरफ्तारियाँ कर मेहसी की ओर बढ़ा । एकतीसरा दल मेहसी स्टेशन की ओर बढ़ा । पहला दल मेहसी में घुस कर इसके चौक बाजार पर यमराज की नाई खड़ा हो गया ।

सुबह में 'शाव' अपने स्नान तथा रामायण-पाठ से निवृत होकर श्री हरिहर चौधरी तथा अन्य कई कार्यकर्ताओं से आन्दोलन के कार्यकम अपनी गद्दी पर बैठे तय कर रहे थे । कार्यों के विषय में निश्चय कर लेने के बाद 'शाव' ने सूचना अपने बाजार पर के लोगों को कर देने के लिए श्री तपीचन्द राम को वहाँ भेजा । खादी की पोशाक में लोगों से बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से बातचीत करते हुए देख कर गोरों ने श्री तपीचन्दराम को गिरफ्तार कर लिया । फिर 'रामअवतार बाबू रईस, अराम अवतार बाबू रईस का मकान कहाँ' की रट गोरों ने लगा दी । श्री 'शाव' को गोरों के आने की खबर लग गई । यह भी ज्ञात हो गया कि श्री तपीचन्द को उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है और हमारा मकान पूछ रहा है । लेकिन वे बिल्कुल ही निर्भीक बने रहे । कुछ लोगों ने तो उन्हें गद्दी से हट जाने के लिए आग्रह पर आग्रह किया । लेकिन वे थे वीर और सचमुच महाभारती । उनके चेहरे पर डर का जरा भी चिन्ह नहीं दीख पड़ा । उल्टे उन्होंने लोगों को बिल्कुल निर्भय रहने के लिये कहा और अपने बाजार के लोगों को भी नहीं घबड़ाने के लिए कहलवा भेजा । सच है,

ऐसे ही समय पर महापुरुषों के हृदय की सच्ची, पहचान मिलती है ।

कुछ ही देर में गोरे श्री तपीचंद राम को लिए 'शाव' के निकट आ धमके । नौकरों ने उन्हें बैठने के लिए कुर्सियाँ दी । लेकिन इन्हें तो बाबू को बन्दी बनाने की धुन थी । सभी 'शाव' के सामने एक अर्द्धवृत में खड़े हो गए । कैप्टेन राईट ने गद्दी पर पड़ी कुंजियों का झब्बा उठा लिया । उसने कनतोड़ और फिर बड़ी सन्दूक को खोल दिया । बहुत रुपये उसने निकाल लिए । बहुत कीमती चीजें भी निकाल ली और दस्तावेजों तथा बहियों को फेंक-फाँक दिया । इसके बाद उसने शाव ने कुरता, टोपी और जूते पहर लिए, गोरों ने इन्हें अपने बीच कर लिया और गोदाम से पच्छिम चले । श्री शाव गाँव के मालिक और बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे । वे साधारणतः किसी के द्वार पर नहीं जाते थे । लोगों को उनको पैदल इस तरह जाते देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ । गोरों की कुछ भी परवाह नहीं कर अनेक आदमी उनके निकट उनके अभिवादन में आ गए । लेकिन दुष्ट गोरों ने उनके भाव को नहीं समझा और आशंकित भाव में उन्हें बन्दी बनाते गए । मोहन तिवारी के निकट पहुँचने पर कुछ फूँक-फाँक भी की । वहाँ से आगे बढ़ कर अर्जुन बाबू का मकान घेर लिया । मुजफ्फरपुर में रेलवे अफसरों को उनका नाम भी दिया गया था इसलिए उन्हें ये बन्दी बना लेना चाहते थे । इनके मकान के दिक्षण पूरब के कोने पर खड़े एक गोरे ने अपने आगे संतकुमार प्रसाद को अपने घर के भीतर भगते हुए देखा । वह चिल्ला उठा - डंद ंसजण डंद

भ्ंसजण ऐ खड़े हो, खड़े हो । लेकिन वे भागते ही रहे । इस पर उसने उनपर गोली चला दी छर्रे बाई ओर नितम्ब में लगे । गोरे ने वीरेश्वर के घर की ओर भी मुंह कर ताका लेकिन कहाँ किसी को नहीं पाया । इस समय वह तेलिया सराय पुल को तोड़ने चला गया था । वहाँ जनता ने पुल तोड़ने नहीं दिया ।

अर्जुन बाबू घर पर नहीं मिले । इस पर गोरों ने उनके गोदाम पर धावा बोल दिया । उनके गोदाम में एक बटन कारखाना है । उसमें कारीगर काम कर रहे थे जो गोरों को देख कर बहुत ही भयभीत हो गए । बुंदेल यादव नामक एक कारीगर कारखनने से निकल कर उत्तर की ओर भागा । लेकिन ज्योही वह गोदाम की दीवाल फाँदते ही रहा था कि गोरे ने उसे गोली मार दी । लेकिन वह थरथराता हुआ घर भाग ही गया । उसका घर वहाँ से करीब आध मील पर है । यह दूसरे दिन मर गया । अर्जुन बाबू को गोरे नहीं पकड़ सके । वे लोग सभी बन्दी को लिये स्टेशन पहुँचे । शाव के साथ 19 आदमी बन्दी थे । ये थे ;1द्ध तपीचचंदराम, ;2द्ध श्री विश्वेश्वर तिवारी, ;3द्ध श्री गिरिजा तिवारी, ;4द्ध शिवपूजन तिवारी, ;5द्ध शिवधारी सिंह राउत, ;6द्ध खेदू बढ़ई, ;7द्ध बुझावन मिस्त्री, ;8द्ध कमलालाल, ;9द्ध परमेश्वर लाल, ;10द्ध बृजकिशोर प्रसाद, ;11द्ध सरयुग महतो, ;12द्ध गोनउर शाह, ;13द्ध लक्ष्मीराम, ;14द्ध खेलावन ठाकुर, ;15द्ध राजेश्वर, ;16द्ध सुन्दर सिंह, ;17द्ध बिन्दा बिहारी, ;18द्ध मुक्तेश्वर प्रसाद, ;19द्ध केशव बिहारी ।

गरों ने शाव सहित इन लोगों से स्टेशन पर लाईन के रोड़-कंकड़ इकट्ठा करवाया । स्टेशन से दक्षिण जहाँ

इंजीन पानी लेती है वहाँ इन लोगों से काम करवाया था । यहाँ लाइनें पहले से ही बिल्कुल टूटी हुई थी । प्रपंची कैप्टेन ने सबों को एक झुण्ड में लाईन बटोरने की स्थिति में झुका कर फोटो भी खींच लिया । उसने ऐसा इसलिए किया कि संसार को यह बतलाया जा सके कि इन लोगों को लाईन तोड़ते हुए पकड़ा गया था । फोटो लेने के बाद इन लोगों को इन्टर लोकिंग में ला कर बन्द कर दिया । यहां ये लोग इन पर क्रूरता करने की चाल में लगे । शायद सबों को शूट कर देना चाहते थे । लेकिन साथ में रहने वाले एस.डी.ओ. श्री मोहन चौधरी के बीच-बिचाव पर मुखिया श्री शाव को ही शूट करना तय किया । इन दुष्ट गोरों ने अपनी पाशविक अदूरदर्शी बुद्धि से मुखिया जी के अन्त में आन्दोलन का अन्त समझा लिया । श्री शाव तो यहां के नेता थे ही । लेकिन जड़ पकड़ा हुआ आन्दोलन मुखिया की मृत्यु से शीघ्र मर मिटने वाला नहीं था ।

'शाव' को उनके गोदाम से स्टेशन की ओर गोरों का ले जाना जैसे ही मैंने सुना कि उनसे मिलने मैं झटके पांव स्टेशन की ओर चल पड़ा । वर्तमान नाके पर पहुँचते ही दक्खिन ओर चौराहे पर खड़ी एक टेंक मैंने देखी । इस पर एक गोरा पच्छिम ओर मुंह किये खड़ा था । वह था बढ़ा ही चौकन्ना । लेकिन वह मुझे कुछत्रस्त सा दीख पड़ा । सम्भवतः जनता के रोष की आशंका में उसके होश उड़े हुये थे । उसके सटे सामने से बेधड़क पच्छिम की ओर आगे मैं बढ़ चला । वह मुझ पर विस्मित नेत्रों से देखता रहा लेकिन टोंका नहीं । मैंने आगे बढ़कर देखा तो बिल्कुल सन्नाटा छाया

हुआ था । इस समय इधर किसी भी प्रकार का सुगबुगी नहीं थी ।मानवता के अधिकार को हरण करने के लिये हथियार उठाने वाले इन कूर गोरों को कुक्कुर–कौए भी देखना नहीं चाहते थे ।

डाक खाने के निकट पहुँचते ही मैंने कैप्टन राईट को––जिसका नाम मैं बाद में जान सका था, स्टेशन की ओर से अपनी ओर आते हुये देखा । यह काफी लम्बा था और था पतला । इसके पीछे गोरे तीन पंक्तियों में आगे बढ़ते आ रहे थे और इन सबों के पीछे दो बड़ी कारों पर सवार गोरी पल्टन धीरे–धीरे हमारी ही ओर आ रही थी । सामने निर्भय जाते हुए मुझे देख कर कैप्टन राईट गरज पड़ा –– ‘ीव लवन इम ट कौन हो तुम ? मैंने उत्तर दिया : ‘ ंउ ं जमंबीमत वा जीम सवबंस भ्पही म्दहसपेी ैबीववसण मैं स्थानीय हाई स्कूल का एक शिक्षक हूँ । इस पर वह मेरी ओर और आगे बढ़ आया और भौ तान कर बोल उठा ––श्ॅमसस ेमम लवनत ेजनकमदजे ूपजी जीम सवबंस चनइसपब ींअम कपेचसंबमक जीम सपदमेण ‘ ींकबवउम जव इनतद जीम अपससंहम इनज ‘ ींअम बंनहीज जीम तपदह समंकमतेण ज्मसस जीमउ पा जीम ेवउमजीपदह ींचचमदे ‘ ींसस बवउम ंहंपदण्श देखो, तुम्हारे विद्यार्थियों ने यहां के लोगों के साथ लाईनें तोड़ दी है । मैं गाँव ही जलाने आया था लेकिन गुट के अगुवों को पकड़ लिया है, उनसे कह दो कि ऐसे ही हरकत रही तो मैं फिर आऊँगा । मैंने उत्तर दिया ––ैपतए पज पे अमतल कपापिबनसज जव ेमम जीमउ जीमेम कंलेण ठनज ‘ ींसस जतल उल इमेजण साहब ! उन लोगों से आज कल मिलना बहुत कठिन है, लेकिन मैं यथासाध्य प्रयत्न करूंगा । इस पर वह मेरी ओर अपना दाहिना हाथ भाँज कर हिन्दी में

कहने लगा--'कह दो कि गोरा पलटन गाँव जलाने आया था और फिर आवेगा ।' यह कह कर वह अपने दल के साथ आगे बढ़ आया । जिस समय कैप्टेन राईट से मुझे बातें हो रही थी मथुरा प्रसाद डाकखाने के भीतर से मेरी ओर झांक रहे थे । उस समय की उनकी अचम्भित आकृति इन पंक्तियों के लिखते समय अभी भी मेरे सम्मुख मूर्तिमान मालूम पड़ रही है ।

मैं गोरों के बीच से स्टेशन की ओर बढ़ा । स्टेशन के बगीचे में सैकड़ों जाट सिपाही मिले । एस.डी.ओ. के साथ हुई स्टेशन की ओर की सारी बातें मुझे वहीं एक भलमानुष से ज्ञात हो गई ।भला अरसे की अधीनता मानव को अधःपतित कर क्या नहीं कहला सकती है । मैं प्लेटफारम पर जा पहुंचा । स्टेशन के उत्तर ओर गाड़ी लगी थी । गोरों ने बन्दियों को इन्टर लोकिंग से निकाल गाड़ी में बैठा दिया । कुछ ही देर के बाद श्री 'शाव' को उतार लिया । उनको आगे आगे कर चार गोरे दक्षिण की ओर चले और स्टेशन के सामने पहुंच कर पच्छिम मुड़ गए और माल गाड़ी के दक्खिण करीब 3-4 डग पर आड़ में उनको खड़ा किया । श्री शाव का मुख दक्खिण-पूरब की ओर था और ये चारों गोरे उनके सामने पच्छिम-उत्तर मुंह किए खड़े हो गए । इन सबों के हाथ में एक-एक राईफल थी । मैं प्लेटफारम आकर शाव के निकट जाने के लिए लाईन तक पहुंचा कि एक जाट सिपाही ने मेरी बाँह पकड़ कर मुझे रोक लिया । मुझे याद पड़ती है कि उस समय प्लेटफारम पर पंजाबी सिंह चक्कर काट रहा था । यह एक रेलवे ड्राइवर था । यहाँ तिहुर्त मुन बटन फैक्टरी के सामने

बसा हुआ है । वह यहां छुट्टी में आया था । लाईन टूट जाने और गाड़ियों का चलना बन्द हो जाने के कारण यहां अटक गया था और इस समय गाड़ी पर बैठने की अनुमति चाह रहा था ।

श्री शाव को घेरे चार गोरे थे । एक था उँट सा लम्बा और तीन थे गदहे से नाटे । लम्बे ने हाथ उठा कर और डपट कर शाव से आन्दोलन के अन्य अगुवों के नाम पूछा । वीर शाव ने कहा-- 'और कोई नहीं है ।' इस पर वह दुष्ट गोरा आग-बबूला हो गया और अपने राईफल के कुन्दे से शाव की बाई कोख में जोर से मारा । शाव को बड़ी चोट लगी लेकिन वे अपनी जगह पर खड़े रहे । परन्तु तुरन्त ही पुट-पुट-पुट की तीन आवाजें कुछ धुंए के साथ हुई । यह आवाज हत्यारे गोरों द्वारा शाव पर गोली चलाने की थी । श्री शाव धरती पर धड़ाम गिर गये और बड़ी चीख के साथ एक पूरे चक्कर में ऐंठ कर वेदना से व्याकुल हो गये । आखिर शेर की शक्ति की भी तो कोई सीमा होती है ।

'क्या मार दिया' - मुझे रोक रखने वाले जाट सिपाही ने मुझसे पूछा ।

'क्या मारने का भी आर्डर है' मैंने उससे पूछा । उसने कहा हां ।' यह सुनकर मुझ पर जो बीती वह वर्णनातीत है । पूज्य शाव की छटपटी जैसे ही कुछ कम हुई कि गोरों ने अपने हाथ भांज-भांज कर उन्हें खड़े होने के लिये कहा । वे खड़े हो गये मानों उन्हें कुछ हुआ ही नहीं । उनके खड़े होने पर मैंने देखा कि उनके बायें कन्धे से उनकी बाईं कलाई तक लाल सूर्ख

एकरंगे जैसी एक पट्टी उनके कुरते में करीब 3 अंगुल चौड़ी हो गई थी ।

नृशंस गोरे ! नाज करने की तुम्हारी सभ्यता क्या यही है । एक निहत्थे देश-भक्त पर एकान्त में गोली का निर्मम प्रहार ! क्या देश-प्रेम, देश-भक्ति तुम्हारे यहां गुनाह है । अगर नहीं तो दूसरे देश में तुम्हारी ऐसी राक्षसी चाल क्यों ? दुष्ट हो या कायर ! दूसरे देश में अपनी मनुष्यता भी खो बैठते हो ।

46 वर्ष के योद्धा गोलियों से घायल कर दिये गये उनके शरीर से खून का फव्वारा चल रहा था । तो भी वे ऐसे खड़े हो गये कि गोरों की गोलियां भी शर्मा गई । मरणासन्न होने पर भी अविचलित महात्माओं की महानता ऐसी ही होती है । मृत्यु पसन्द लेकिन कायरता आने की नहीं । मातुभूमि के उद्धार के लिए देहावसान हो--यही उस महान आत्मा की निष्टा थी।

गोरे शाव को आगे-आगे कर लाईन टपते हुये उत्तर की ओर चले । शाव की चीख की आवाज़ से गाड़ी पर बैठाये सभी साथी दुर्घटना को ताड़ गये थे । उनकी छाती दहल रही थी । गोरों ने गाड़ी में सभी बन्दियों के निकट शाव को बैठा दिया । वे वेदना से बहुत ही विकल थे । अपने नेता की इस दशा से सभी बहुत दुःखी हुये । श्री पतीचन्द रोने लगे । लेकिन शाव ने चुप रहने का इशारा किया और कहा कि भय की कोई बात नहीं । यह 24 अगस्त की बात है ।

मैं जाट सिपाहियों से मिला । गोरों के घुणित अत्याचार के कारण उनके चेहरों पर उदासी छाई हुई थी । इन लोगों के दिल में भी देश प्रेमियों के लिए दर्द था ।

उनके अन्तस्थल में भारतीयता अवश्य थी लेकिन वे दासता के शिकंजे में थे । उन लोगों से मैंने निवेदन किया कि जख्मी शाव को फस्ट-एड दिलवाने की अनुमति मुझे मिले । उनका सरदार मुझे कैप्टेन राईट के निकट ले गया और मुझे अनुमति दिलवा दी । एक जाट सिपाही मेरे साथ स्थानीय अस्पताल में आया डा. नूमान कहने पर बड़े भय के साथ खड़े हुये और गाड़ी के निकट चल कर पट्टी बांध दी । जख्म गहरे थे । जख्म देखते ही डाक्टर की हालत ऐसी हुई मानों काटें तो खून नहीं । वे पसीने-पसीने हो गये थे । उनके मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी । बड़ी मुश्किल से उनने कहा कि ज्यादा हर्ज नहीं मालूम पड़ता है । फिर कम्पाउण्डर ने एक खुराक दवा पिलादी । इसी बीच बुन्देल को लाकर लोगों ने अस्पताल में रखा । फिर वह मोतीपुर ले जाया गया और वहीं उसके प्राण निकले ।

स्टेशन से मैं शाव के घर गया । जी में था कि यहां लोगों को ढाढस दिया जाय । लेकिन यहाँ बुद्धि काम नहीं दे सकी । परिवार के सिरमोर की हठात् ऐसी अन्तिम अवस्था सुनते ही विषाद की प्रबल प्रवाह बह चला था । ड्योढ़ी के भीतर कोहराम मच गई थी और वहाँ से करुण चीत्कार में स्वयम् करुणा कराह रही थी । शाव के भाई श्री रामाश्रय प्रसाद ने बन्दूक निकाल ली थी और हत्यारे गोरों से प्रतिशोध लेने के लिये स्टेशन की ओर चल पड़े थे । बड़ी कठिनाई से बन्दूक उनके हाथ से छीनी गई और उन्हें रोका गया ।

शाम तक फौज के सिपाहियों ने कई बार गाँव को रौंदा । सारी बस्ती दहल गई थी । काफी शाम होने पर बन्दियों को गोरे गाड़ी पर मुजफ्फरपुर ले गये । घायल शाव स्टेचर पर अस्पताल पहुंचाये गये । श्री तपीचन्दराम ने स्टेचर उठते समय कान्ति के नारे लगाये और गोरों की अंगुलियाँ राइफलों के घोड़े पर जा पहुंची । किन्तु तपीचन्द राम ने तनिक भी परवाह नहीं की । शाव के दर्शन के लिए लोगों का तांता लग जाता लेकिन गोरे लोगों को उनके निकट नहीं जाने देते । वे अस्पताल के भीतर मिलिटरी कमाण्ड में रखे गये लेकिन अन्य सभी बन्दी जेल भेज दिये गये ।

मुजफ्फरपुर अस्पताल ही में दूसरे दिन करीब दो बजे दिन में मेहसी केसरी श्री 'शाव' परमगति को प्राप्त हुए । आपको गोलियाँ लगी थीं तीन-एक बाँये कँधे पर और दो बाँई ओर कोख में, जिनसे नाभि क्षेत्र में घातक मार लगी । आपके देहावसान का दिन था मंगल और तिथि थी श्रावण सुदी चतुर्दशी । आपके जन्म ग्रहण और स्वर्गारोहण दोनों एक ही दिन, तिथि तथा मास में हुए । ऐसा सुन्दर सामंजस्य विरले ही पाया जाता है । आपका अन्तिम संस्कार चांदवारे घाट पर अपने ही लोगों ने किया । वे लो थे, ईश्वर साह; बलदेव साह; सरयुगराम; शंकरराम; सहदेवराम; गुमास्ता गनपतराय और महम्मद मिआं । गोरे जानते थे कि एक बड़े आदमी के साथ अत्याचार हो गया है । हो सकता है कि इसके कारण जनता द्वारा कोई प्रदर्शन किया जाय और शासन के साधनों पर प्रतिकिया की जाय । इस आशंका और भय में गोरों ने धधकती चिता तक अपनी

आवा-जाई और फेरी बार बार जारी रखी । दाह संस्कार के समय कुछ झींसी-फूसी भी हो गई, मानो देवराज इन्द्र ने श्री शाव की वीरगति पर प्रसन्न होकर पुष्पों की वृष्टि उन पर की ।

शरीर भंगुर है । आत्मा अमर है । परहित देहदान जीवन की सुन्दरतम उपयोगिता है । शाव ने अपने जीवन में इसी नियम को निबाहा । इतने निस्वार्थ भाव से देशोद्धार हित अपना जीवन अर्पित कर दिया । करोड़ों भारतीयों के जीवनदान हेतु अपना जीवन त्याग किया । उनके बलिदान से सारा देश आभारी हुआ । इस महाविभूति के अमर दान से देश की चिरकालीन दासता दूर होने में महा बल मिला और मेहसी बन गया एक तीर्थ स्थान, मेहसीवासियों के लिये तथा सभी भारतीयों के लिए ।

मेहसी आंचल के इस अगस्त-क्रान्ति यज्ञ में हेडमास्टर पूज्य श्री फणिभूषण भट्टाचार्य, बी.एस.सी. का स्थान पुरोहित का रहा । आप उन व्यक्तियों में हैं जिनका जन्म राष्ट्रीय जागरण के लिए हुआ है । आप एक कुलील श्रोत्री मैथिल ब्राह्मण है । आप मालदा के निवासी हैं। आप के कुल की सिद्वत्ता ओर बड़ाई से प्रभावित होकर आप के किसी पूर्वज को बड़े आग्रह के साथ मिथिला ;बिहारद्ध से आमन्त्रित कर जैसोर के महाराज ने बसाया था, आप एक बड़े मेधावी पुरुष हैं । आपके स्वस्थ शरीर और संयमपूर्ण सम्भाषण ने आपको गहन और गोप्य जन-कार्यों के लिए बहुत ही योग्य बना दिया है । जब गोरी अंग्रेज सरकार ने बंग-विच्छेद किया तो बंगाल में बड़े जोर के साथ

स्वदेशी आंदोलन छिड़ गया और बाद में यह आंदोलन कांति में परिणत हो गया । आपने अपने दल के साथ इस आंदोलन में भाग लिया था यद्यपि आप उस समय अपने विद्यार्थी जीवन में ही थे और बिल्कुल ही एक किशोर थे । जब बंगाल के करीब प्रत्येक प्रमुख स्थान में आपके दल का केन्द्र स्थापित हो गया तो आप अपने दल द्वारा बिहार में संगठन करने के लिए भेजे गये । यहाँ भागलपुर कालेज में एक विद्यार्थी रहकर आपने कांति की लहर सुदूर तक फैला दी । आप अपने राष्ट्रीय कार्यों के लिये अंग्रेजी सरकार की नजर में बुरी तरह खटक गए और सी.आई.डी. के लोगों के चंगुल में फंसा दिये गए ।लेकिन आप निर्भीकता पूर्वक अपने कार्य में आगे बढ़ते रहे और मेहसी पहुँचकर यहाँ के दूधमुंहे हाईस्कूल की हेडमास्टरी का भार भी अपने कँधे पर रख लिया । अध्यापन कार्य तो आप के परिवार की परम्परागत वृत्ति था ही । आप एक पूजनीय अध्यापक होने के साथ ही कांति की आग की ताप में जीने वाले एक सफल साधक हैं ।

'शाव' का परिवार बहुत बड़ा है । आपके चाचा श्री सुन्दर शाह जी करीब 125 वर्ष के हैं जिन के समय का अधिकांश हरिभजन में ही तीतता है । श्री दीनानाथ प्रसाद आपके भतीजा और गद्दी के मालिक है । मालिक होने के लिए इन्हें रुतबा भी प्राप्त है । श्री मिश्रीलाल प्रसाद और श्री ब्रजबिहारी प्रसाद आपके सुपुत्र हैं । अपने पूर्वजों के चरण चिन्ह परथे लो भी चल रहे हैं और उम्मीद है कि कुल की मर्यादा ये लोग सदा बनाये रहेंगे । श्री गधाकन्त प्रसाद भी आपके परिवार में

एक बहुत जनप्रिय नवजवान हैं । शाव के कुटुम्ब के लोग भी धनवान होने के अतिरिक्त विद्वान भी और इनमें अनेक सरकारीउच्च पदों पर हैं । आपके समधी भी धर्मनाथ प्रसाद जी अखिल भारतीय सांस्कृतिक महासभा के वर्षों तक महामन्त्री तथा छपरा म्युनिसिपेलिटी के 9 वर्ष तक पेसिडेन्ट थे । आप एक नामी जज थे । हाल ही में आपकी असामयिक मृत्यु हुई है । वीर 'शाव' के स्वर्गवासी होने पर गोरों ने आन्दोलन को दवा देने के लिए बड़ा जुलूस किया । सभी गोरों अंगरेज नहीं थे । कनाडियन और अमेरिकल की संख्या भी काफी थी । निहत्थे हिन्दुस्तानियों को सजा देने के लिये समूची आँग्ल जाति उठ खड़ी हो गई थी । सभी गोरे न पुलिस के थे और न फौजी ही थे । इनमें जमीन्दारी, व्यवसायी और जज इत्यादि भी थे जो अपने पेशे को भूलकर हिन्दुस्तानियों को शिकार करने में लग गए । हिन्दुस्तान में जितने गोरे रहते थे सबों को सैनिक शिक्षा लेनी पड़ती थी और सबों को सहायक सेना के सदस्य बनना पड़ता थे । सहायक सेना में रहकर भी गोरे अपने अपने दूसरे पेशे भी करते थे लेकिन आपत्तकाल में सरकार के लिए दुश्मनों के साथ लड़ना पड़ता था । जमीन्दार और व्यवसायी होने के नाते गोरों को जनता के बीच रहना पड़ता था और स्वार्थवश वे अनेकों से दुश्मनी भी रखते थे । इस समय इन लोगों ने दमन का बड़ा काम किया । इनमें अनेक पुलिस एस.पी. तथा फौजी अफसर बनाऐ गये । बारा चकिता स्टेट का अंगरेज मेनेजर ए.जे.के. रिचार्डसन वी.वी.ई., वेतिया राज्य के एक सरकल आफिसर अंगरेज

मेरींग इत्यादि चम्पारण में मिलिटरी एस.पी. बनाये गये थे । और जगहों की नाई मेहसी में भी हेडमैन तथा भेदिये सरकार की ओर से नियुक्त किये गए थे । दफादार और चौकीदार दरोगा बन बैठा था । टैंक ले ले यहां गोरे बार बार आये । साथ में हिन्दुस्तानी पुलिस कभी कभी रहा करती थी । इनने बस्ती को बार रौंद डाला । यहां बलूची सिपाही तनात कर दिये गये जिनने मनमानी जुल्म किया । इन लोगों ने कई बड़े आदमियों को अपमानित किया तथा कई की दूकानें लूटी जैसा कि भोला मिश्र और नारायणराम की । पागल कुत्ते-सियार की नाई थे बलूची सिपाही लोगों के खँसी-पाठी उठा ले जाते और मार खाते । दूकानों से आटा-घी उठा कर ले जाते । इस पर भी सरकार की ओर से म्युनिटिम टैक्स लगाने की भी बात थी जो लोग गोरों या पुलिस से घायल थे उनलोगों का इलाज करना डाक्टरों को मना था । बाहर इलाज या दूसरे काम के लिए जाने के लिये दारोगा से, कार्ड लेकर तब रेलवे टिकट लेना पड़ता था । दारोगा कार्ड देते नहीं या देते तो बहुत ही खुश करने पर । गोरे से घायल सन्तकुमार प्रसाद को बटन के विकय के नाम पर पुलिस से कार्ड मिला और पटने में छिपकर डेरे पर गैर सरकारी रूप में डाक्टरों से इलाज कराने पर उनकी जान बची ।

इन आफतों के अलावे डाकुओं ने भी जुल्म करना शुरू कर दिया । उनने मेहसी का अड़ोस-पड़ोस की जगहों को अपना राज्य घोषित कर दिया । ये मनमानी तौर पर लोगों से रुपये-गहने उपहार लेते । लोग बस्ती छोड़

अपने बाल-बच्चों के साथ बाहर भागते लेकिन रास्ते में भी डाकुओं के शिकार बनते । पुलिस की लूट एक ओर, और डाकुओं की एक ओर - इस दोहरी आपदा से जनता त्राहि-त्राहि मच गई । श्री शिवसहाय राय और श्री लखिचन्द राय के मकान तो दिन-दहाड़े लूट लिए गये । इसके अतिरिक्त अन्य कई के मकान भी लूटे गये । आखिर बड़ी जीवट के साथ बस्ती के कुछ जवानों ने इन हथियार बन्द शत्रुओं के दल से बस्ती को बचाया ।

टैकस वसूल के काम लिये सरकार की ओर से यहां नियुक्त मोतिहारी के एस.डी.ओ. श्री एस.के. सरकार को मैंने स्थानीय हाई स्कूल में जन बीच बहुत ही कोसा तथा सरकार की नीति की तीव्र ओलोचना कठोर शब्दों में की और साफ साफ घोषित कर दिया कि सरकार रक्षण का कार्य नहीं बल्कि भक्षण का कार्य करवा रही हैं । वे बहुत ही प्रभावित हुए और मोतीहरी जाकर कलेक्टर से मिलकर बलूची सिपाहियों को यहां से हटवा दिया । लेकिन इनकी जगह पर जो देशी सिपाही आए उनने भी कम आफत नहीं ढाई । एक दिन नाजीरगंज के बाजार तो हजारों आदमी उनकी बन्दूकों के शिकार होते होते किसी तरह गिरते पड़ते बचे।

ऐसे दमन चक और लूट-खसोट के रहने पर भी आन्दोलन जारी ही रहा । जनता तो दब गई । कांति के मैदान से हट गई । लेकिन कार्यकर्ता डटे रहे, हाँ उनके डटने का तौर-तरीका अब बदल गया । पहले उनका काम खुले-आम होता था लेकिन अब गुप्तरूप से होने लगा । दमनने इन लोगों को दलों में बाँट दिया

एक फरारों का दल, और दूसरा गुप्त आन्दोलनकारियों का । करीब 350 आदमी पर सम्मन और वारन्ट थे । इनके अतिरिक्त अनेक के नाम रेलवे पुलिस की डायरी में थे । उस समय कुछ ऐसी अफवाह भी थी कि अनेक के नाम से शूटिंग वेरेंट हैं । जनता भय से त्रस्त थी । उनके घर भी आन्दोलनकारियों का ठहरना अच्छा नहीं था । उनके अपने घर तो पुलिस की गस्ती और धावे के अड्डे हो गये थे । कई लोग जनानी साड़ी पहन कर घर में सोने पर भी पुलिस से नहीं बचे । इस अवस्था में कानून से बचना तो जरूरी ही था । कुछ लोग तो अपने गाँव ही के अगल-बगल में छिपे । कुछ अपने जिला या प्रान्त ही में किसी शून्य देहाती क्षेत्र में छिपे । कुछ ने नेपाल में जाकर शरण ली । यूनियन बोर्ड की निधि-पुस्तिका के साथ मैं भी अपने सम्बन्धियों के यहाँ करीब एक सप्ताह बाहर रहा। इस सप्ताह में मुझे फरार ठाकुरप्रसाद चौधरी और कमलाप्रसाद से भेंट हुई थी। केदारप्रसाद गुप्त को रिहा करने के लिय मैं समस्तीपुर सरकारी रेलवे पुलिस के सुपरिन्टेन्डेन्ट के यहाँ कई बार गया । वहाँ एक बार मैंने श्री लखिचन्द राय को भी अपने भाईयों के लिये पैरवी करते पाया ।

एस.पी. आयरलैण्ड का निवासी था । उसकी मेम के अनुदार्य से उन दिनों जब उसकी कोठी पर मिटिरी का काफी कड़ा पहरा पड़ता था उससे मिलने का मौका मिला । मैंने उससे बातचीत करके यह पता लगाया कि इस अगस्त कान्ति के प्रति उसे सहानुभूति है । उसने स्पष्ट शब्दों में मुझसे कहा कि कांग्रेसियों को बदनाम

करने के लिये किसी पंचमदली ने तोड़-फोड़ का कार्य किया है । हमारे आयलेण्ड की स्वतन्त्रता की लड़ाई में भी ऐसी कठिनाईयाँ हुई थी । मैंने उसे अपने एक कलात्मक कागज को दिखला कर यह विश्वास दिला दिया कि जिस दिन के आन्दोलनकारी कार्य के लिए उन पर रेलवे केस है उस दिन वे मेहसी में थे ही नहीं--वे मोतीहारी में थे । एस.पी. ने उन पर मुकदमा नहीं चलाने का आर्डर मेरे सामने ही अपने फाइल पर लिख कर अपने इन्स्पेक्टर को दे दिया । श्री रालगन मिश्र को वकील श्री रामलखन मिश्र जी ने भी मुकदमा चलने के पहले ही क्या लिया । आपके व्यक्तित्व से मिलिटरी एस.पी. रिचार्डसन बहुत ही प्रभावित रहता था । ऐसा कहा जाता है कि आप ही के व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण रिचार्डसन ने यहाँ दुबारा गोली नहीं चलने दी । मुकदमे में अनेक कार्यकर्ता गिरफ्तार हुये । अनेक अपने से भी ड़योढ़े में कोर्ट में हाजिर हो गये । मोकदमे बहुत दिन तक चले । अनेक छूटे और अनेक को बहुत बहुत दिन की सजा हुई । अनेक पुलिस की धड़-पकड़ में काफी दिन तक सताये गये । इस प्रकार कार्यकर्ताओं को बहुत ही कष्ट भोगना पड़ा । पाण्डु रोग के कारण श्री रामहादुर ठाकुर का शरीर पीला हो गया था । वकील लोगों से भी जो शान्तिकाल के जीव हैं, इस कान्तिकाल में लोगों को त्राण नहीं मिल पाया था । 'शाव' के थे संगी-साथी निस्सन्देह वीर और श्रद्धेय हैं जिनने ऐसे बीहड़ काल में देश सेवा हित उनका साथ उनके जीवन में और उनके जीवन के पश्चात

भी दिया है जिससे देश को स्वतंत्र होने में बड़ी ही मदद मिली है ।

प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल 14 को वीर 'शाव' की शहीद स्थली पर एकत्र होकर उनके गुणों को याद करना तथा उनको श्रद्धांजलि देना जनता का एक कर्तव्य हो गया है । उनके राष्ट्रीय चरित्र का सन्देश संचित कर रखना हमारा धर्म ही है :-

राष्ट्र हित निज को चढ़ा बलि, अर्चना के योग्य हैं ।
तीर्थ जन्मस्थल बना कर; वन्दना के योग्य हैं ।।
आरती जगमग सदा औ, कण-कण में सुस्वर हैं ।
धन्य 'शाव' शहीद मेहसी, मर कर अमर अमर हैं ।।

क्रान्ति के आंकड़

शहीद – 2

घायल – 1

जिन्हें गोरों ने गिरफ्तार किया और जिन पर दो-दो साल तक लूट, आगलगी, भारत रक्षा तथा कोड़ा कानून इत्यादि के मुकदमे चले ।

नाम और उपाधि केस डायरी के अनुसार हैं

1– विश्वेश्वर तिवारी

2– तपीचन्दराम बढ़ई

3– गोनउर साह

4– गिरजा तिवारी

5– शिवपूजन तिवारी

6– कमला लाल ठाकुर

7– परमेश्वर लाल

8– बृजकिशोर

9– लक्ष्मीराम

10– खेदू बढ़ई

11– सरयुग राउत

12– रामबुझावन

13– केशोलो

14– बिन्दाबिहारी लाल

15– मुक्तेश्वर प्रसाद

16– रामखेलावन ठाकुर

17– शिवधारी राम

18– मुंशी कोईरी

19– भीखारी कोईरी

20– सुन्दर सिंह

चार्जशीट के शिकार हुए

1– अर्जुन प्रसाद

2– बिन्दाराम

3– बलदेवलाल

4– गंगाराम